International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 4, Issue 10, October 2017
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

जायसी की सौन्दर्य–चेतना का स्वरूप

डॉ. पूरण मल मीना
व्याख्याता –हिन्दी
शहीद कैप्टन रिपुदमन सिंह राजकीय महाविद्यालय
सवाई माधोपुर (राजस्थान)

सौन्दर्य चेतना का कवि या कलाकार की रचना से घनिष्ठसम्बन्ध है। अपनी सौन्दर्य चेतना के अनुरूप ही कवि या कलाकार अपनी कृति का सृजन करता है। जिस प्रकार जीवन की अन्य प्रवृत्तियों के मूल में व्यक्ति के सूक्ष्म–चेतना की क्रिया एवं प्रतिक्रिया निहित होती है उसी प्रकार कलाकृतियों के मूल में व्यक्ति की सूक्ष्म–चेतना की क्रिया एवं प्रतिक्रिया निहित होती है उसी प्रकार कलाकृतियों के सृजन एवं आस्वादन के मूल में उसकी सौन्दर्य चेतना की ही अभिव्यक्ति एवं प्रवृत्ति होती है। कलाकार की सौन्दर्य चेतना की सूक्ष्मता, परिष्कृता, व्यापकता एवं गम्भीरता आदि के अनुरूप ही उसकी रचना में विभिन्न गुणों का संचार होता है। कोई भी कवि या कलाकार अपनी कला–कृति के लिए किस प्रकार का विषय चुनता है और उसे किस प्रकार की शैली में प्रस्तुत करता है, उसके पीछे उसकी सौन्दर्य–चेतना के विभिन्न अंगों जैसे– सौन्दर्य–रूचि, सौन्दर्य–बोध, सौन्दर्यानुभूति का योग होता है। जायसी की सौन्दर्य चेतना के निर्माण एवं विकास में पूर्ववर्ती भारतीय प्रेमाख्यानक काव्य परम्परा, फारसी सूफी काव्य धारा एवं तद्युगीन वातावरण का पर्याप्त प्रभाव दृष्टिगत होता है। यहां इनकी सौन्दर्य चेतना पर कतिपय उपशीर्षकों के अन्तर्गत विचार किया जाता है।

सौन्दर्य दृष्टि–जायसी की सौन्दर्य सम्बन्धी दृष्टि अत्यन्त व्यापक एवं गम्भीर थी। वे अपने काव्य में सौन्दर्य के प्रायः सभी पक्षों एवं स्तरों का चित्रण करते हैं जो उनकी इसी विशेषता का परिचायक है। जहां वे स्थूल पदार्थों नगर, द्वीप, प्रासाद, उद्यान, वाटिका आदि का वर्णन करते हुये उनकी विभिन्न विशेषताओं– रूप, रंग, गन्ध आदि का उद्घाटन सम्यक् रूप में करते हैं, वहां वे नारी सौन्दर्य का निरूपण करते हुये न केवल स्थूलता और शारीरिकता तक सीमित रह जाते हैं अपितु उसके मार्मिक प्रभाव की भी व्यंजना करते हैं। जायसी की दृष्टि में ऐन्द्रियकता है, किन्तु उसका लक्ष्य भावना की ओर अग्रसर होना है। यही कारण है कि 'पद्मावत' में प्रणय भाव के मूल में सौन्दर्य की प्रेरणा ही दिखाई देती है।

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

सौन्दर्य के प्रभाव की मार्मिकता में कवि का इतना अधिक विश्वास है कि वह सौन्दर्य के श्रवणमात्र से रत्नसेन के मूर्च्छित हो जाने की कल्पना कर लेते है।

जायसी की सौन्दर्य दृष्टि केवल ऐन्द्रियकता और भावुकता तक ही सीमित नहीं रहती अपितु वह विभिन्न विचारों से समन्वित होती हुई अन्ततः बौद्धिकता से युक्त हो जाती है। कवि सौन्दर्य का निरूपण करता हुआ बीच–बीच में अपने विचारों को भी मुस्फित करता रहता है, यथा– सिंहल के बाजारों की सुन्दरता का निरूपण करता हुआ वह कहता है कि कोई यहां कुछ मोल ले रहा है और किसी का कुछ बिक रहा है। कोई यहां लाभान्वित हो रहा है और कोई मूल से भी वंचित हो रहा है।

''कोई करै बेसाहना काहू केर बिकाई।

काई चला लाभ सौं कोई मूर गंवाई।।''[1]

यहां कवि ने बाजारों के क्रय–विक्रय के माध्यम के मानव–जीवन के हानि लाभ का ही निदर्शन अप्रत्यक्ष रूप में किया है। इस प्रकार जायसी की सौन्दर्य दृष्टि विविध सोपानों को पार करती हुई अन्ततः आध्यात्मिकता के स्तर तक पहुंच जाती है। उन्होंने लौकिक सौन्दर्य के माध्यम से अलौकिक सौन्दर्य की व्यंजना तथा पम कहानी के माध्यम से रहस्य साधना की व्यंजना करते हुए अन्ततः आध्यात्मिकता को प्रमुखता प्रदान की है। अतः यह कहना अनुचित न होगा कि जायसी की सौन्दर्य दृष्टि क्रमशः ऐन्द्रियकता, भावात्मकता एवं बौद्धिकता के स्तरों को स्पर्श करती हुई अन्ततः आध्यात्मिकता के उच्च धरातल का प्राप्त कर लेती है।

सौन्दर्य रूचि– जायसी की सौन्दर्य रूचि के प्रमुख आलम्बन हैं– प्रकृति और नारी। प्रकृति का उन्होंने मुख्यतः उपमानों एवं भावनाओं की उद्दीप्ति के लिए प्रयोग किया है। उन्होंने नायिका की संयोग एवं वियोग की अनुभूतियों की व्यंजना के लिये बसन्त, ग्रोष्म, शरद आदि ऋतुओं का चित्रण किया है। उन्होंने विभिन्न पुष्पों– कुमुद, केतकी, घनबेली, केवड़ा, चम्पा, कुन्द, चमेली, गुललाला, कदम्ब, कुब्जक, सौनजर्द, गुलबकावली, नागकेशवर, सदबरग, निवारी, हारसिंगार, सेवती, रूपमंजरी, मालती, जाही, जूही, सुदर्शन, मौलसिरी, बेला ओर करना आदि के नाम तो गिनवाये है।''[2] किन्तु उसकी रूचि कुमुद, कमल और मालती में ही अधिक रमी है क्योंकि इनका चित्रण उन्होंने 'पद्मावत' में अनेक स्थलों पर विशेष रूचिपूर्वक किया है। पक्षियों में से उन्होंने शुक, भ्रमर, काग हंस, कोकिल, सारस, चक्रवाक–दम्पति को ही अधिक स्थान उल्लेख पशुओं में से उनकी रूचि हाथी और घोड़ा में अधिक रमी है क्योंकि इनके काव्य में कई स्थानों पर हुआ है।

जायसी की सौन्दर्य रूचि नारी सौन्दर्य के चित्रण में पर्याप्त रमी है। उन्होंने केवल नायिकाओं का ही नहीं अपितु अन्य गोण नारी पात्रों यथा–नायिका की सखियों, वेश्याओं आदि के सौन्दर्य की भी व्यंजना की है। नारी सौन्दर्य के चित्रण में कवि की आसक्ति का प्रमाण है– युद्ध की तोपों का भी नारी के रूप में दर्शन करना। ''ये (तोप रूपी)''[3] नारियां योवन के मद से भरी हुई हैं। ऊपर से दारू पोती हैं तो ये गहरी सांस छोड़ती है।यही कारण है कि उन्होंने

नारी के अंग–प्रत्यंगों का विस्तृत निरूपण किया है। नायिका के शारीरिक गुणों में से उन्होंने सुगन्धि एवं क्रान्ति को सर्वाधिक महत्व दिया है। सौन्दर्य प्रसाधनों में से इन्होंने सिन्दूर, तिलक, अंजन, मज्जन, ताम्बूल, चन्दन, खस एवं भीमसेनी कपूर की चर्चा की है। वस्तुतः इस क्षेत्र में इनकी रूचि रंगीन और सुगन्धित पदार्थों की ओर अधिक प्रवृत्त दिखाई पड़ती है। नारी के वस्त्रों में से उन्होंने साड़ी, कचुकी, ओढ़नी, लहंगे आदि का अधिक वर्णन किया है। आभूषणों में से कुण्डल, खुंटिला, खुंग, हार, कंठसिरि, बेसर, फल में इनकी रूचि अधिक रमी है। ऐसा प्रतीत होता है कि इन्हें कान्ति तथा झंकार के आभूषण अधिक प्रिय थे। इस प्रकार हम देखते हैं कि जायसी की रूचि का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक एवं बहुविध है। इसीलिये उन्होंने अपने काव्य मे सौन्दर्य चित्रण के लिये जीवन के प्रायः सभी पक्षों से सामग्री ग्रहण करते हुये नाना प्रकार के पदार्थों, वस्तुओं एवं सौन्दर्य–प्रसाधनों का वर्णन किया है।

सौन्दर्य–चेतना– मनोविज्ञान के अनुसार चेनता के मुख्य तीन प्रकार माने जा सकते है– 1. ज्ञान 2. अनुभूति और चेष्टा। इन्ही को क्रमशः ज्ञान, भावना और क्रिया का नाम दिया जा सकता है। सौन्दर्य चेतना सामान्य चेतना का ही एक पक्ष अथवा एक अंग है। अतः इस दृष्टि से चेतना के आधार पर ही सौन्दर्य चेतना के तीन भेद क्रमशः किये जा सकते हैं– आदर्शमूलक सौन्दर्य–चेतना जिसमें ज्ञान की प्रधानता होती है, स्वच्छदता मूलक सौन्दय–चेतना जिसमें भावना का प्रार्दूभाव होता है और यथार्थमूलक सौन्दर्य–चेतना जिसमें क्रिया की प्रधानता होती है। जायसी की सौन्दर्य–चेतना सामान्यतः स्वच्छन्दता मूलक प्रतीत होती है क्योंकि उसमें इसकी निम्नांकित प्रवृतिया दृष्टिगोचर होती हैं–

(क) भावना की प्रमुखता–स्वच्छन्दतामूलक चेतना में भावना की प्रमुखता होती है। ''ये कवि प्रणय–भावना के समक्ष परिवार, कुल समाज एवं धर्म के बन्धनों को त्याज्य स्वीकार करते हैं। 'पद्मावत' एवं 'चित्ररेखा' में भी प्रेम की महत्ता का गुणगान अनेक स्थलों पर किया गया है। प्रेम को ही जीवन का सर्वोपरि तत्त्व स्वीकार किया।''[4] रत्नसेन अपने प्रणय–स्वप्नों की पूर्ति हेतु विविध बाधाओं का सामना करता है। वह प्रेम के मार्ग में मृत्यु से भी भयभीत नहीं होता। पद्मावती भी अपनी प्रणयभावना के लिये प्राणों का उत्सर्ग करना उपयुक्त समझती है। 'चित्ररेखा', 'अखरावट', 'आखिरी कलाम' एवं 'मसलानामा' में भी प्रेम को ही सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है। इस प्रकार इनकी सौन्दर्य–चेतना में भावना का प्राधान्य दृष्टिगत होता है।

(ख) वैचित्र्य एवं अद्भुत का संयोग– रोमांटिक या स्वच्छन्दतामूलक सौन्दर्य चेतना की एक अन्य विशेषता है–''सौन्दर्य के साथ वेचित्र्य का संयोग। वाल्टर पेटर के अनुसार भी सौन्दर्य के साथ अद्भूत का संयोग ही कला में स्वच्छता के स्वरूप का निर्माण करता है और प्रत्येक कलात्मक सर्जन में सौन्दयाकांशा के साथ औतसुक्ष्म का योग ही स्वच्छन्दतामूलक प्रकृति का पोषक होता है।''[5] जायसी भी सौन्दर्य की व्यजंना करते हुये वैचित्र्य एवं अद्भुत संयोग कर देते हैं। उदाहरणार्थ– 'पद्मावत में सिंहलगढ़ सम्बंधी वर्णन दृष्टव्य है–

''उस गढ़ को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि मानों आकाश को छू रहा हो। वह पाताल में कूर्म और वासकि की पीठ पर ठहरा हुआ है। उसके ऊपर पहुंचने से इन्द्रलोक पर

दृष्टि पड़ जाती है। उसके चारों ओर ऐसी बांकी खाई है जिस पर दृष्टिपात करना सम्भव नहीं हैं। यदि उस अगम और असूझ खाई को देखकर कोई उसमें डर के कारण गिर पड़े तो वह सप्त पाताल में पहुंच जायेगा। उस कोट के नौ बांके द्वार (पंवरी) नौ खण्ड़ों में हैं। जो उन नौवों पर चढ़ जाता वह आकाश पर पहुंच जाता है।''[6] उस गढ़ पर चार पड़ाव देकर चढ़ना चाहिये। जो सत्य से चढ़ेगा वह पार पहुंच जायेगा। इसी प्रकार गढ़ पर सोने के वृक्ष की कल्पना भी अद्भूत है। उस सोने के वृक्ष की जड़ पाताल में है और शाखा स्वर्ग में है, उस पर फैली अमरबेल कौन पाता है और चख सकता है। चन्द्रमा उसके पत्ते है और तारे फूल है। इस प्रकार जायसी ने विभिन्न वस्तुओं के वर्णन में वैचित्र्य एवं अद्भुत का संयोग किया है।

(ग) काल्पनिकता– स्वच्छन्दतामूलक सौन्दर्य चेतना की उत्सभूमि कल्पना ही है। डॉ. कुमार विमल के अनुसार– ''मानव सौन्दर्य या मानवेतर सौन्दर्य को जब कल्पना का रमणीय आवरण प्राप्त होता है तब वह कलात्मक सौन्दर्य का रूप धारण कर लेता है। ऐसी ही सौन्दर्य दृष्टि को, जिसकी पृष्ठभूमि में कल्पना का अतिरेक रहता है, साहित्य विवेचन में 'रोमांटिक' कहा जाता है।''[7] जायसी ने विभिन्न दृश्यों का वर्णन कल्पना की सहायता से किया है। ''सिंहलद्वीप का वर्णन करते हुये उन्होंने कल्पना की है कि वह द्वीप ऐसा प्रतीत होता है मानों स्वर्ग के निकट हो। उसके चारों ओर घनी अमराइयां लगी हुई हैं जो ऐसी प्रतीत होती है मानों धरती से उठकर आकाश का स्पर्श कर रही हों। पद्मावती के तिल को देखकर कवि कल्पना करता है कि ध्रुव नक्षत्र भी उसके सौन्दर्य को देखकर ठिठक गया और आकाश में ही स्थिर हो गया। इसी प्रकार उसकी मांग में पिरोये हुये मोतियों के सम्बन्ध में कवि कल्पना करता है कि मानो यमुना में गंगा की धारा मिली हो।''[8] उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि जायसी की सौन्दर्य चेतना में कल्पना का आधिक्य है।

(घ) प्रकृति का मानवीकरण–रोमांटिक सौन्दर्य चेतना की एक अन्य विशेषता है– जड़ या निर्जीव पदार्थों तथा प्रकृति को मानवीय भावनाओं से युक्त चित्रित करना। जायसी ने विभिन्न जड़ पदार्थो– मानसरोवर, समुद्र एवं तोपों का मानवीकरण किया है। पद्मावती के सौन्दर्य पर मानसरोवर को भी मुग्ध होते हुये दिखाया है। जब पद्मावती स्नान के लिये आगे बढ़ने लगती हैं। इसी प्रकार 'पद्मावत' में समुद्र को भी बाह्मण के रूप में चित्रित किया गया है, उसे रत्नसेन से वार्तालाप करते हुये दिखाया गया है। ''तोपों को भी उन्होंने नारी के रूप म चित्रित करते हुये लिखा है कि मदिरा पीने में मतवाली ये तोपें रथों पर ही लेटी रहती थी। किन्तु शत्रुओं के सामने उठ खड़ी होती थीं। वे इतनी भारी थीं कि सारा संसार भी यदि उन्हें खींचने में लग जाये तो वे तब भी न हिलती थीं। पक्षियों को भी मानवीय गुणों से युक्त वर्णित किया गया है। हीरामणि तोता एक पक्षी होकर भी राजा रत्नसेन और पद्मावती से बातचीत करता है। इसी प्रकार नागमती की विरह्–व्यथा से द्रवीभूत होकर एक पक्षी उसकी व्यथा का कारण पूछता है।''[9] अनेक स्थलो पर उन्होंने मानव की भावनाओं से प्रकृति का तादात्म्य स्थापित किया है। नागमती की विरहव्यथा से प्रभावित होकर पलाश का वृक्ष पत्र–विहीन हो गया और उसके रक्त में डूबकर लाल रंग का हो गया है। उसी के रक्त में डूबकर विम्बफल

लाल हो जाते हैं और उसी की सहानुभूति में परवल पककर पीला पड़ गया है और गेहूं का ह्रदय फट गया। राजा रत्नसेन के विरह रूदन से प्रभावित होकर आकाश से मेघ प्रलयवर्षा करने लग गये, जिससे सागर मर्यादा छोड़ बैठे और पर्वत–शिखर डूबने लगे तथा पानी उबलने लगा। चट्टानों तक का ह्रदय फटने लगा और हवा भी पानी पानी होकर आंसू बहाने लग गई। अतः इसमें कोई सन्देह नहीं कि जायसी ने प्रकृति का मानवीकरण करते हुये अपनी रोमांटिक दृष्टि का परिचय दिया है।

(ड) सौन्दर्य का सूक्ष्म एवं व्यापक रूप– स्वच्छन्दवादी कवियों के लिये सौन्दर्य एक महान् वस्तु होती है, अतः वे उसको सूक्ष्म एवं व्यापक रूप में चित्रित करते है। जायसी ने पद्मावती के पवित्र एवं पारस रूप की अभिव्यक्ति अनेक स्थलों पर की है। पद्मावती के नेत्रों को जिसने देखा, वे कमल बन गये। उसे हंसते हुये जिसने देखा व हंस बन गये। उसके दांतों की ज्योति जहां–जहां भी छिटकी, वह–वह जगह हीरा एव ंनग बन गईः इस प्रकार दृष्टि के समस्त पदार्थों ने दर्पण की भांति उसके अंगों का प्रतिबिम्ब ग्रहण किया। इसी प्रकार जायसी ने उसके सौन्दर्य का व्यापक प्रभाव चित्रित किया है। पद्मावती की बरानियों से वे समस्त सृष्टि के बांधे जाने की कल्पना कर लेते हैं। उन्होंने नायक रत्नसेन के माध्यम से भी समस्त सृष्टि में व्यापक पद्मापती के सौन्दर्य की ओर इंगित किया हैं। अतः कहा जा सकता है कि जायसी ने सौन्दर्य का चित्रण अत्यन्त व्यापक रूप में किया है।

(च)रहस्योन्मुखता– कवयित्री महादेवी वर्मा के अनुसार प्रत्येक सौन्दर्य या प्रत्येक सामंजस्य की अनुभूति भी रहस्यानुभूति है। प्रत्येक सौन्दर्य–खंड अखंड से जुड़ा है और इस तरह हमारे ह्रदयगत सौन्दर्यबोध से भी जुड़ा है। कलाकार के लिये सौन्दर्य में ही रहस्य की अनुभूति सहज है। जायसी की सौन्दर्य चेतना भी रहस्योन्मुख है। उन्होंने लौकिक सौन्दर्य के माध्यम से अलौकिक सौन्दर्य की अभिव्यक्ति की है। उन्होंने आत्मा और परमात्मा के ऐक्य की अनुभूति को 'पद्मावती' के माध्यम से व्यक्त करते हुये लिखा ''मैं श्रृगार करके उस प्रियतम से मिलने के लिए कहां जाऊ वह तो मुझे सर्वत्र ही दिखाई दे रहा है। जो प्रियतम मेरे ह्रदय में बसा हुआ है वह शरीर से अलग कैसे हो सकता है। मेरे नेत्रों में भी वही समाया हुआ है इसलिये मैं जिधर भी देखती हूं उधर कोई और नहीं दिखाई देता। मेरे भीतर जो रस भरा हुआ है उसे भी देखती हूं उधर कोई और नहीं दिखाई देता। मेरे भीतर जो रस भरा हुआ है। उसे भी वह स्वयं ले रहा है और मेरे अधरों से लगकर मुझे रस प्रदान करने वाला भी वही है।''[10] इसी प्रकार उन्होंने सौन्दर्य की व्यंजना करते हुये विभिन्न आध्यात्मिक विचारों की भी व्यंजना की है। सिंहलद्वीप की हाट को जगत् के रूप में चित्रित करते हुये लिखते है ''वहां का (हाट का) अंत ही दिखाई नही देता था। वहाँ सभी वस्तुयें अत्यधिक मात्रा में थी। वहां का वाणिज्य अत्यन्त ऊचे धरातल पर होता था केवल अमीर व्यक्ति ही वहां वस्तु मोल ले पाते, निर्धन मुख देखते रह जाते थे। सबने वहां खरीदारी की और फिर घर लौटने की तैयारी की पर बेचारा ब्राह्मण वहां क्या खरीदे क्योंकि उसको गांठ में पूंजी बहुत ही थोड़ी थी।''[11] अस्तु, कवि ने विभिन्न प्रसंगों में लौकिक दृश्यों का चित्रण करते हुये उनके माध्यम से अलौकिक संकेत दिये हैं जो उनकी रहस्योन्मुखता को प्रमाणित करते हैं।

(छ)अलंकरण की प्रधानता– स्वच्छन्दतावादी कवियों में अलंकरण की प्रवत्ति का प्राधान्य होता है। जायसी ने भी विभिन्न प्रकार के अलंकारों का प्रयोग अतिशय मात्रा में किया है। उन्होंने मुख्यतः अनुप्रास, यमक, पुनरूक्ति, श्लेष, उत्प्रेक्षा, रूपक, अतिशयोक्ति, तद्गुण, दृष्टान्त, अर्थान्तरन्यास, निदर्शना, विरोध, भ्रम, विभावना, परिकरांकुर, पत्यनीक सन्देह, मुद्रा, पयोक्ति एवं अन्योक्ति आदि अलंकारों का प्रयोग किया है। डॉ. शिवसहाय पाठक पद्मावत की अलंकार–योजना का सूक्ष्म विश्लेषण के करने अनन्तर इसी निष्कर्ष पर पहुंचे है कि ''इसमें अलंकारों का प्रयोग अत्यन्त सुन्दर एवं स्वाभाविक रूप में हुआ है। इतना ही नहीं हमारे विचार में तो जायसी में है अलंकार योजना की प्रवृति कहीं कहीं तो पति की सीमा को भी पार कर आती है जो कि उनके अलकरण–प्रियता प्रवृत्ति का प्रमाण है।''[12]

इस प्रकार जायसी के काव्य में स्वच्छन्दतापूर्वक सौन्दर्य चेतना की प्रायः सभी प्रमुख विशेषताओं दृष्टिगोचर होती हैं। साथ ही उनके काव्य में विचारात्मकता, दार्शनिकता एवं आध्यात्मिकता की प्रवृत्तियों का विकास भी कम नहीं हुआ है। ये प्रवृत्तिया आदर्शमूलक सौन्दर्य चेतना से सम्बद्ध हैं। अतः ऐसा प्रतीत होता है कि कवि की सौन्दर्य चेतना का उन्मोलन एवं एवं विकास का मूलतः स्वच्छन्दतापरक रूप में हुआ था किन्तु आगे चलकर उसकी चरम परिणति आदर्शवादिता में हो गई। उदाहरण के लिये वे पद्मावत में सौन्दर्य, प्रेम और विरह के स्वरों में प्रणयकथा का निरूपण करते है किन्तु अंततः वे उसके माध्यम से जगत् की नश्वरता का प्रतिपादन करते हुय रहस्यानु–भूति एवं निर्गुण–प्राप्ति की साधना को चित्रित करते हैं इस तथ्य को ध्यान में रखते हुये कहा जा सकता कि जायसी की सौन्दर्य चेतना मूलतः स्वच्छन्दतामूलक होती हुई भी अन्ततः आदर्शोन्मुखी हो जाती है। अतः यह कहना उचित होगा कि जायसी की सौन्दर्य चेतना आदशान्मुखी स्वच्छन्दतामूलक सौन्दर्य चेतना थी।

सन्दर्भ सूचीः–

1. सम्पादक वासुदेवशरण अग्रवाल– पद्मावत तृतीय संस्करण पृष्ठ 43
2. सं. डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल– पद्मावत, पृष्ठ 40
3. कहो सिंगार सो जैसी नारी। दारू पिवहिं सहज मतवारी।
   उठै आगि जो छांडहि स्वांसा। तेहि डर कोउ रहे नहिं पासा।। पृष्ठ 655
4. तीन लोक चौदह खण्ड सबै परै मोहि सुक्ति।

   (क) प्रेम छाडि किछु औरू न लोना जों देखो जों देखों मन बूक्ति।

   –वासुदेवशरण अग्रवाल–पद्मावत–पृष्ठ 108

5. Water Pater Appreciation- Page. 258
6. सम्पादक–वासदेवशरण अग्रवाल–पद्मावत पृष्ठ 47
7. डॉ. कुमार विमल–छायावाद का सौन्दर्य शास्त्रीय अध्ययन पृष्ठ 107
8. जबहि दीप निअरावा जाई। जनक बिलास निअर भा आई।
   धन अंबराउ लाग चहु पासा। उठै पुहुमि हुति लाग अकासा।

वासुदेवशरण अग्रवाल–पद्मावत–पृष्ठ 30

9. सखर रूप बिमोहा हिएं हिलोर करेई।
   पाय छुवै मकु पावों तेहिं मिसु लहरे देइ।।
   वासुदेवशरण अग्रवाल–पद्मावत–पृष्ठ 71, 118
10. कै सिंगार ता पंह कहं जाऊ। मोहि कह देखो वहिं आउं।
    जो जिउ मंह तो उहै पियारा। तन मंह सोइ न होइ निरारा।
    जैनन्ह मांह तो उहै समाना। देखउं जहां न देखउं आना।
    आपुन रस आपुहि पै लेई। अधरू सहें लागे रस देई।
    वासुदेवशरण अग्रवाल–पद्मावत–पृष्ठ 391
11. देखि हाट किछु सूक्त न होरा। सबै बहुत किछु दीख न धोरा।
    पै सुठि ऊंच बनिज तंह केरा। धनी पाउ निधनी मुख हेरा।।
    सबही लोन्ह बेसाइना श्रो घर कीन्ह बहोर।
    वांभन तहांलेई का गांठि सांठि सुठि थोर।।
    वासुदेवशरण अग्रवाल–पद्मावत–पृष्ठ 84
12. आचार्य शिवसहाय पाठकः पद्मावत का काव्य सौन्दर्य पृष्ठ 93